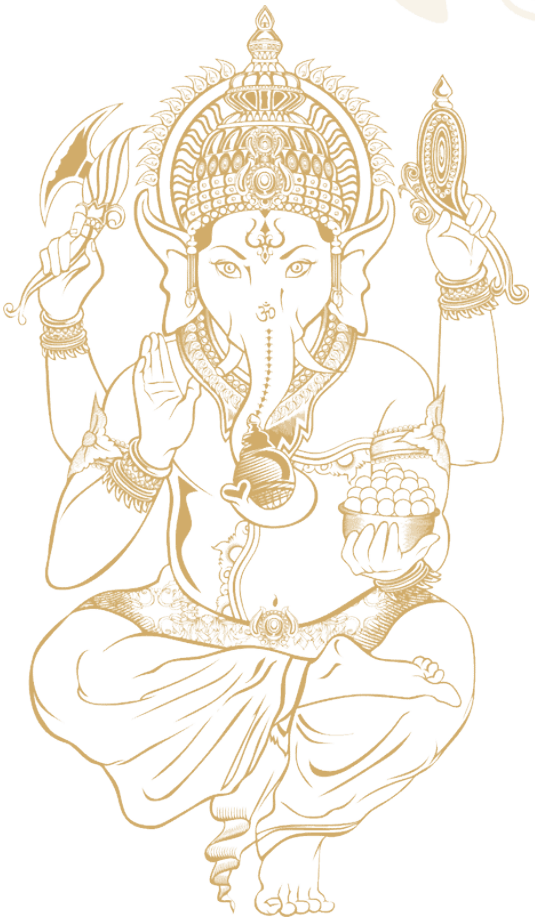

Girl

29 Dec 2025

11:19 PM

Noida

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120813901

तिथि 29/12/2025 **समय** 23:19:03 **वार** सोमवार **स्थान** Noida **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:18
अक्षांश 28:40:00 उत्तर **रेखांश** 77:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:16 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	05:32:31 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:02:02 घं	योनि	अश्व
सूर्योदय	07:12:30 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:32:27 घं	वर्ण	क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	चतुष्पाद
शक संवत	1947	वर्ग	सिंह
मास	पौष	युँजा	पूर्व
पक्ष	शुक्ल	हंसक	अग्नि
तिथि	10	जन्म नामाक्षर	चो-चोखी
नक्षत्र	अश्विनी	पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
योग	शिव	होरा	गुरु
करण	गर	चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
केतु 2वर्ष 1मा 16दि		भ्रामरी 1वर्ष 2मा 18दि	
केतु		भ्रामरी	
29/12/2025		29/12/2025	
15/02/2028		19/03/2027	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		29/12/2025
	00/00/0000	संकटा	18/07/2026
	29/12/2025	मंगला	28/08/2026
गुरु	09/01/2026	पिंगला	17/11/2026
शनि	18/02/2027	धान्या	19/03/2027
बुध	15/02/2028		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			29:43:47	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	राहु	---	0:00			
सूर्य			14:02:49	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि	0.89	भ्रातृ	पितृ	सम्पत
चंद्र			09:16:40	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	सम राशि	1.07	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	16:44:18	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि	0.97	अमात्य	भ्रातृ	सम्पत
बुध			01:00:06	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	सम राशि	0.81	कलत्र	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		27:25:42	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.38	आत्मा	धन	वध
शुक्र		अ	12:08:39	धनु	मूल	4	केतु	बुध	सम राशि	0.96	मातृ	कलत्र	जन्म
शनि			01:49:05	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.17	ज्ञाति	आयु	वध
राहु	व		16:59:15	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		16:59:15	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

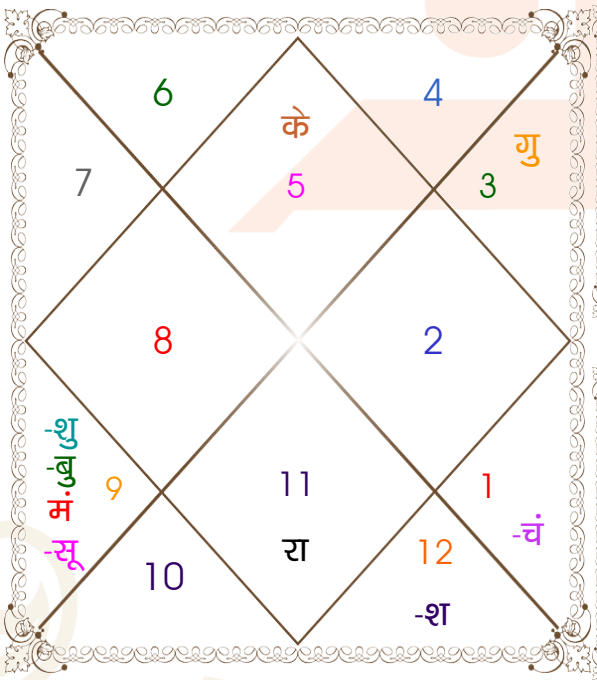

चन्द्र कुंडली

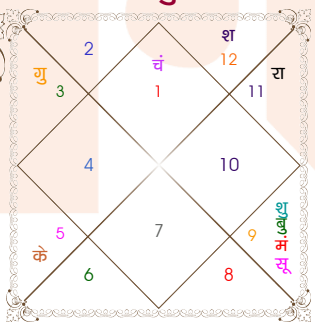

नवमांश कुंडली

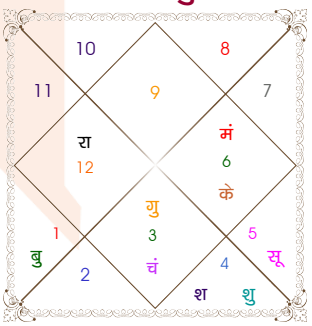

सर्वाष्टकवर्ग

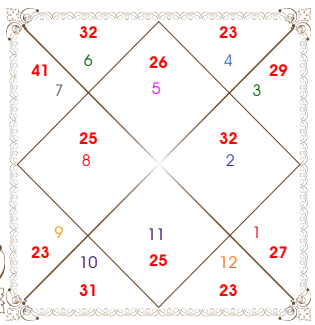

दशमांश कुंडली

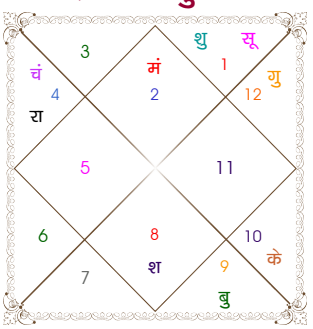

Nakshatra jyotish Ratan kendra
C-10 Rajendra Nagar Bareilly
919458160000
amitkalra40@gmail.com

नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल हैं। आपकी योनि अश्व, गण देव, नाडी आद्य, वर्ग सिंह तथा वर्ण क्षत्रिय हैं। तृतीय चरण के अनुसार आपके नाम का प्रारम्भिक अक्षर "चो" होगा।

गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण आपको जन्म समय में ही इसकी शान्ति करानी चाहिए। यद्यपि तृतीय चरण में इसका अल्प दोष ही माना जाता हैं। फिर भी शान्ति करवाने से लाभ ही होगा। इसके लिए योग्य विद्वान से नक्षत्र के मंत्र के कम से कम 28 हजार जप करवाने चाहिए तथा शान्ति के दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन कराना चाहिए। इस प्रकार इसका दोष समाप्त हो जाता है।

मंत्र – ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप श्रृंगार तथा आभूषण प्रिय होंगी। इनसे आपका हार्दिक लगाव रहेगा। क्योंकि आप सौभाग्यवती होंगी इसलिए इन सब वस्तुओं को प्राप्त करने में आपको किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होगी। आप अपने कार्यो को दक्षता तथा बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगी जिससे समाज में प्रशंसा योग्य होंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य अत्यन्त ही चित्ताकर्षक होगा तथा मित्रता करने वालों की बहुलता होगी।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

ज्ञानार्जन की रूचि आपकी बाल्यकाल से ही रहेगी। दूसरों के प्रति आपका व्यवहार शालीन एवं नम्र होगा। जिससे आपकी कीर्ति दूर दूर तक फैलेगी। आजीवन आप धन एवं सुखैश्वर्य से भी युक्त रहेंगी।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

सत्य का पालन करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगी। प्रारम्भ से ही सेवा भाव की प्रवृति आप के अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी। सर्व प्रकार के भौतिक सुख सम्पति की स्वामिनी बनने के आपके योग बनते हैं। सुन्दर पति तथा सद्गुणों से युक्त पुत्र आपकी कीर्ति को सदा बढ़ाते रहेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

आप अपने कार्यों में अत्यन्त व्यस्त रहेंगी फलस्वरूप शरीर व खान पान का अच्छी तरह से ध्यान नहीं रहेगा जिससे शरीर में स्थूलता बढ़ सकती है। अपने धन, ऐश्वर्य तथा अच्छे व्यवहार के कारण आप सर्वसाधारण जनता में खूब लोकप्रियता प्राप्त करेंगी तथा सभी वर्गो की सहानुभूति, आदर तथा विश्वास भी प्राप्त करेंगी।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाली होंगी तथा आप अपने अन्य भाई-बहनों में श्रेष्ठ हो सकती हैं।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के सदृश गौर वर्ण तथा लाली लिए गोलाकार नेत्र होंगे। आपके सिर में किसी चोट या घाव का भी निशान हो सकता हैं।

हाथ पैर पर कमल के समान विशिष्ट कान्ति होगी। जल से आप नैसर्गिक रूप से

भयभीत रहेंगी। जीवन में जितनी कठिनाइयां आएंगी आप साहस पूर्वक संघर्ष करने में सक्षम सिद्ध होंगी। समाज से आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। आप चंचल बुद्धि वाली होंगी। धन को आप जरूरत से ज्यादा महत्व प्रदान करेंगी तथा सब कुछ मान सम्मान धन को ही समझेंगी। इससे कभी कभी आपके लिए अतिरिक्त समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। मित्रों तथा सहयोगियों की आपको कमी नही रहेगी बङी संख्या में ये लोग आपके साथ रहेंगे। सन्तान में कन्या की अपेक्षा पुत्र अधिक होंगे।

साथ ही स्नेहशील स्वभाव होने के कारण सामाजिक जनों में आप प्रिय रहेंगी।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्विंतत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप नाराज होकर शीघ्र ही प्रसन्न भी हो जाएंगी। भ्रमण तथा सैर करना आपके रूचिकर कार्य होंगे। सुदूर क्षेत्रों की यात्रा आपको अच्छी लगेगी। आपकी हथेली में शौर्य को प्रदर्शित करने वाले चक्र पताका आदि के निशान भी हो सकते हैं। आप पुरूषों के समाज में विशेष प्रिय तथा आदरणीय होंगी। आप अपनी कठिन से कठिन परिस्थितियों की अवहेलना करके दूसरो की सेवा तथा सहयोग करना अपना परम पुनीत कर्तव्य समझेंगी।

वृतातामृदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करने की प्रवृति से बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी भी असन्तुष्ट होंगे। जिससे वे आपसे या आप उनसे कभी भी अलग हो सकती हैं। घर के दैनिक तथा सामाजिक कार्यों के विषय पर पति पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा जिससे संबधियों से वैमनस्थ में वृद्धि होगी। धन तथा पुत्रों से आप सुशोभित रहेंगी तथा स्ववैभव से समाज में अच्छी कीर्ति प्राप्त करेंगी।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

घूमने में आपकी रूचि ऐसे स्थानों पर भ्रमण करने की होगी जहां आसानी से सामान्यतया पहुँचा जा सके। सामाजिक सबंधों की विस्तृता के कारण आप मौका पङने पर मांस, मदिरा आदि पदार्थों का भी उपभोग कर सकती हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपकी स्वभाव से ही उग्र प्रकृति होगी यह उग्रता क्रोध के रूप में उत्पन्न होने पर अनावश्यक परेशानी उत्पन्न करेगी। आप चंचल प्रवृति की होंगी तथा अवसरानुकूल मिथ्या भाषण भी करेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

आप यौगिक क्रियाओं को भी प्राथमिकता देंगी। साथ ही पित्तकारक पदार्थों से परहेज रखें अन्यथा मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर तथा सत्य से युक्त होगी। दूसरे लोगों को आपकी वाणी द्वारा कभी कोई कष्ट नहीं पहुचेगा। सब कुछ सादगी से ग्रहण करने वाली बुद्धि से आप युक्त होंगी। सात्विक तथा अल्प भोजन में आपकी रूचि रहेगी। गुणों की आप ज्ञाता होंगी। महान तथा विद्वान लोगों द्वारा वर्णित गुण आप में सर्वथा विद्यमान रहेंगे। धन, वैभव, ऐश्वर्य तथा भौतिक सुखों से आप कभी भी अभावग्रस्त नहीं रहेंगी आजीवन आपको इनकी स्वामिनी बनने का गौरव प्राप्त होगा।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी सुन्दरता देखने लायक होंगी। आपकी प्रवृति दानशील होगी तथा इसे आप अपना प्रमुख कर्तव्य समझकर इसका पालन करेंगी। आप अत्यन्त सरल हृदय होंगी। दिखावेपन से हमेशा अलग रहेंगी। भोजन आप अल्प मात्रा में करना पसन्द करेंगी तथा आप एक श्रेष्ठ विदुषी भी होंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्व योनि में आपका जन्म होने के कारण आप स्वच्छन्दचारिणी होंगी तथा अपने सारे कार्य बिना किसी हस्तक्षेप या सलाह के करना पसन्द करेंगी। आप सद्गुणों से युक्त होंगी। साहस तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। आप अधिकांश कार्य स्वयं के बल तथा साहस से सम्पन्न करेंगी। समाज में आप एक प्रभुत्व सम्पन्न महिला के रूप में प्रतिष्ठित रहेंगी। आपको मान सम्मान तथा आदर की कमी नहीं होगी। आवाज आपकी थोडी खण्डित रहेगी अर्थात् मोटी होगी। आप में वफादारी का गुण भी नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगा। जिसके भी साथ रहेंगी अथवा कार्य करेंगी पूर्ण स्वामिभक्ति एवं वफादारी का परिचय देंगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन

कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की, मघा नक्षत्र, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन इत्यादि कार्य न करें अन्यथा असफलता मिलेगी या अशुभ फल होंगे। लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त रविवार, मघा नक्षत्र, बवकरण, प्रथम प्रहर तथा जब चन्द्रमा मेष राशि में स्थित हो तब भी कोई शुभ कार्य आरम्भ नहीं करें अन्यथा अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां ही उत्पन्न होंगी। इन्ही दिनों तथा समय में शरीर की सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल सिद्ध हो रहा हो मानसिक परेशानियों में वृद्धि हो रही हो या नौकरी में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो साथ ही व्यापार में हानि हो रही हो अथवा संभावना हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, तांबा, गेहूं, गुड़, रक्त वस्त्र इत्यादि पदार्थो का यथा शक्ति किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। साथ ही मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।